॥ श्रीहरि: ॥

भक्तवर:

* श्री पीपाजी महाराज *

की

परिचई और वाणी

स्वामी वैष्णवाचार्य
रण देवडी
शाहपुर बाहर
अहमदाबाद



प्रकाशक—

पीपापंथी दर्जी,

गिरधारी ।

॥ श्री ॥

भक्तवर

श्री पीपाजी महाराज की परिचई और वाणी ।

प्रकाशक—

श्री पीपाजी महाराज के भक्त

श्री गिरिधारीजी पीपापंथी

वक्तव्य-लेखक—

श्रीमान महाराज श्री अजीतसिंहजी साहबों के

प्रधान सेवक सहृदय साक्षरवर्य—

श्री शिवजारामजी साहिब

सम्पादक—

अमृतलाल माथुर

प्रथमवार १००० } न्यौ. चार आना { बसन्त पञ्चमी सम्वत १९९८

❋ श्री राम ❋

पीपाजी की परिचई।

❋ चौपाई ❋

सब संतन की आज्ञा पाऊँ। पीपाजी की कथा सुनाऊँ॥
गागरोनि पुर पाटन थानो। कीनो दास अनन्त बखानो॥
गागरोनि पुर वरनूँ कैसा। खोदिये पाप धरम तहँ पैसा॥
बहु विधि वापी कूप निवासा। अरु मंडप सोहै चहुँ पासा॥
तिहि पुर पीपा खीची राऊ। परजा कूँ दुख देय न काऊ॥
राज नीति राखै परमानू। रण सूरो धरमिष्ट सुजानू॥
कुली छत्तीस बसैं तिहि ग्रामा। दान पुन्य सबही के धामा॥
पीपा पूजे आदि भवानी। देवी नगर कोट की रानी॥
बहु विधि करै मातकी सेवा। और न कोई दूजो देवा॥
देवी हेत करे सब धरमू। जाने नहीं मुकति को मरमू॥
छटे महीने होम करावे। चैत कुँवार अष्टमी आवे॥
सुकल पक्ष पूजा आरम्भै। अष्ट दिनाँ व्रत सूं मत थंभै॥
निस वासर वेदी न बुझावैं। विप्र सुवासर रैन जगावै॥

पोथी भणै रु आहुति देही । साकल होम वासना लेही ॥
खीर, खांड, घृत, खारक दाखा । लोंग इलायचि कपूर नाखा॥
पाटम्बर नारेल सुपारी । गूगर अगर चिरौंजी जारी ॥
तिल, जौ, नाग वेल के पाना । गटा सिंघारा माहीसाना॥
ऐसी विध करि माता सेई । राते चन्दन टीका देई ॥
उठिके पूरण आहुति देही । पाछे ब्राह्मन भोजन लेही ॥
ले दक्षिना करै अवशेषू । दे आशीष करैं मन तोषू ॥
छाजन भोजन पात्रहु दई । धरम करै जग में जस लई ॥
अपने रिपु को मरदे मानू । खट दरसन को सदा किसानू।
परधन परदारा ते न्यारा । बांह बोल दे कबहु न हारा ॥
बारह बरस भये या रीतो । एक दिना उपजी भय भीतो॥
अरधरात्रि सोवत ते जागा । उठि बैठो तब रोवन लागा ॥
तेहि अवसर देवी चल आई । मांगि, मांगि अपने मनलाई॥
हूं जालपां प्रसन्न भइ तोई । किहि दुख दुखी सुनाओ मोई॥
कै तन व्याधी व्यापी आजू । कै दारिद कीनों के साजू ॥
कै वैरी परचंड तुम्हारा । ते सब आज करू संहारा ॥
उमग्यो प्रेम न उचरे बैना । देवी अँचलहि पूछे नैना ॥
ज्यूं बालक राखे महतारी । भोजन देन कहै भर थारी ॥
कछु चेतन कछु भयो अचेता । कहै मात सू संकट जेता ॥
हूं सुपने महिषासुर मारा । भाजि चल्यो तब करी पुकारा ॥
अंध-कूप महि गयो गिराई । हूं जाग्यो तब रह्यौं हिराई ॥

डरपी बहुत आतमा मेरी । अस्तुति करत न आवे तेरी ॥
ताते तोपहि कछू न मांगूँ । जानत हूं घट अपनो भांगूँ ॥
बार बार कै बिनऊं तोही । सेवग जानि मुक्ति दे मोही ॥
माया के सुख देखूं ऐसा । बालपना मैं बिष्टा जैसा ॥

[दोहा]

पूरब ले अंकूरतै, पायौ पीपैं ग्यान ।
सत गुरु के परसाद बिन, जागे नाहीं ध्यान ॥१॥

❋ चौपाई ❋

माता रही ठगी सी ठाढी । बहुरि बदन ते बात न काढी ॥
पीपा बोलै सुनि आनंदी । अब तूं काटि हमारी बंधी ॥१॥
कनक कामनी लोकबडाई । तातैं सुख नाहँ देखूँ माई ॥
जां लग सुर नर कष्ट कराही । संच धरे औ खरचै खाही ॥
तीन लोक में माया मीठी । कैसे छूटे रंग मजीठी ॥
जो हरि भक्ति न हिरदे आवे । ब्रह्मज्ञान बिन कौन छुडावे ॥
मेरे मुक्ति कहां तै देखी । चूकै नाहीं साध विवेकी ॥
और सबै सुख देहूं तोही । खुशी परे तो पूज हि मोही ॥
जो तू करे मुक्ति की आशा । करि हरि सेवा मेटी साँसा ॥
हरि, भगतन कूँ सरबस दीजै । और धर्म को नांव न लीजै ॥
तब हरि तूठै करे न बारा । कुटुम समेत उतारे पारा ॥
सुनत वचन माता के डरियो । पीपा मूर्छित धरनी परियौ ॥

चल्यो पसीनौ सगरै गाता। मानूं मारि गयौ सनिपाता॥
पीरौ बदन बतीसी कारी। धीमी स्वासा धीमी नारी॥
पलक न उघरे लोचन मूंदे। जनु सोवे अज्ञान उनींदे॥
मृतक समान भई सब काया। तब देवी मन उपजी दाया॥
करे दया रु पिवावे नीरूं। जैसे बहन समावै बीरू॥
पांच घरी पाछै भयौ, चेतू। उठि बैठ्यो मन मैं संकेतू॥
हियौ ठकौरे छांडै स्वासा। रोवै रूठै जानि अवासा॥
मै तूं मुक्ति जान कै सेई। तै पापनी कहे गुन एही॥
तब ते क्यूं न कह्यौ समझाई। मेरी सेवा नाहि भलाई॥
काहे कू कीन्हों विश्वासू। जौन मिटावे गरभ-निवासू॥
माता कहे कबैं तैं बूझी। जों तोंहि बात मुक्ति की सूझी॥
झूठौ दोष न लागे मोही। सेव करत क्यौ वरजूं तोही॥
मूरख मुक्ति कहा की मेरे। वेद पुराण सुनावत टेरे॥
लोभारथ पूजे सब कोई। और धरम तै मुक्ति न होई॥
सकल देवता हरि के चेरे कहिबे सुनिबे को बहुतेरे॥
आदि अंत सब कूं हरि जाने। सोई करे हरि के मनमाने॥
हरि उतपति हरि परले करई। औरन डर हरि कबहुन डरई॥
हरि के डर सब लोग डराई। हरि कू संका कत ही नाहीं॥
अजरअमर अवगत अविनासी। हरिभगतनकूं सबसुखरासी॥

[दोहा]

ऐसो हरि सब ते बडो, हरि ते बडो न कोइ ।
करि हरि सेवा दीन ह्वै, बहुरो जनम न होइ ॥ २ ॥

❋ चौपाई ❋

पीपो कहै सीख द मोही । हूँ अनाथ ह्वै बुझूं तोही ॥
किहि विधि करूं राम की सेवा । कैसे जानूं हरि को भेवा ॥
हूं अपारथी मति को हीनौं । अभिमानी नाहीं मन दीनौं ॥
हरि सेवा कठिनाई कहिये । मृतक समान सरन ह्वै रहिये ॥
तब देवी कीनो उपकारा । जातैं पीपा उतरे पारा ॥
नगर बनारसि रामानंदू । ताकै तन मन बहुत अनंदू ॥
सो गुरु करौ बतावे भक्ति । निहचै होइ तुम्हारी मुक्ति ॥
तब देवी गइ आज्ञा मांगी । उलटि चरण पीपा के लागी ॥
तेहि औसर जागे सब कोई । माता प्रात गई है सोई ॥
ज्यूं बन भूल कुरंग न जोवे । ऐसो विलखो पीपो रोवे ॥
जैसे साहु बनिज कूं जाई । बारह मास रहै व्हां छाई ॥
निठवे जाय समद कै पारा । मारी बाढ नगर पैसारा ॥
मानूं दों डार हू कों जरिया । कंत बिना जैसो सुन्दरिया ॥
जनुपुहपन परि पन्योतुसारा । देख न धायो सब परिवारा ॥
बूझै काहू ज्वाब न देही । रुदन करै अरु सांसा लेही ॥
एक विचारे डसि गयो सरपू । ताको देह वियाप्यो दरपू ॥

एक विचारे मूठि चलाई । गुनी गारडू लेहु बुलाई ॥
एक विचारे राकस लागो । एक विचारे ठगु ठगि भागो ॥
एक विचारे उपजी व्याधी । तातै बहुत भइ असमाधी ॥
वैद बुलावहि मूरी करही । भोपा बूझै भूतैं डरही ॥
टौंना टामन मंत्र उचारे । और देवि कौ गहनौ सारै ॥
पढे जोतिषी बांचन आनै । दान दियो गरहाइत जानैं ॥
ते सब हारे मरम न पायौ । निहचै भांग धतूरौ खोयौ ॥
कौंन कौंन को लीजि नाऊं । पश्चाताप करे सब गाऊं ॥
निज कुटंबि रोवे अति गाढे । नारि सहित बैंठे अरु ठाढे ॥
को पीपा बिन करिहै राजू । सूनो नगर होत है आजू ॥
यह सगरो स्वारथ की रीती । दुरलभ परमारथ की प्रीती ॥
पीपा कहे अपनपौ राखौ । हम कारण कोई जिन झाखौ ॥
आवे रे आवैं जम धारी । हरि की ओट लेउ नरनारी ॥
पुरखा रोवै तुम्हारे मारे । अपने बल काहू न उबारे ॥
जदि पहुँचै माहारनसूरे । बडौ कुटुंबी धन के पूरे ॥
मैं अपने मन ज्ञान विचारा । नाहिन और उबारन हारा ॥
हरि सेवा करि हूं चित लाई । सुमरूं नहीं जालपा माई ॥
तातै ऊभो करूं पुकारा । कोइ न जाने दुःख हमारा ॥
नां ठग ठग्यो न लागो प्रेतू । उपजौ मन मैं हरि सू हेतू ॥
पीपैं ज्ञान कह्यौ समझाई । काहू मन परतीत न आई ॥

[दोहा]

दास अनंत विचार बिन, बहयौ जाय संसार ।
कोड यक हरि जन ऊबरे, जो राखै करतार ॥

❋ चौपाई ❋

पीपा अपने मन में छोहै, हरि बिन और कौनको को है ।
कौंन पापवै हूं हरि भूलो, तन मन कुटंब देखि कै फूलो ॥
पूरब जन्म हुतो अपराधी, तातै हरि की भक्ति न साधी ।
हरि गुन कबहूं सुने न कांना, भूलि रह्यौ झूठै अभिमाना ॥
कै कीरतन कियौ नहिं काऊ, कै सुमरिन पर धरयो न भाऊ।
सालिगराम असम करिं जाना, चरनौदक सूं ना मन माना ॥
हरि मूरति की करी न सेवा, पूजत डोल्यौ औरे देवा ।
नाद उचैत करे करि भाऊ, अंतर कपट न छाडयौ काऊ॥
दासातन करि देह न गारी, कबहू मित्र न कीए मुरारी ॥
तन मन हरिकै हाथ न दीनौ, एकउ अंगन सुमरन कीनौ ।
ना भगतन के चरण पखारे, सबंसु अरपि न घर बैठारे ॥
ऐसी भांति बहुत जुग बीते, जन्म जन्म उठि उठि गये रीते ।
राखि राखि गोपाल गुसाईं, अब आयौ तेरी सरनाई ॥
तो बिन कौन उतारे पारा, विखै नदी बूडौ संसारा ।
तुम समरथ सब सुखके दाता, को न तुम्हारी सरन समाता॥
व्याध गीध गनिका गज पांडे, जिनके पाप कहत है चांडे ।

तिन हू तारत लगी न बारा। और पतित को गिने अपारा।
तातै मोहि भरोसो तेरौ । उपज्यो ग्यान भरम गयो मेरो ॥
यह करुणा करि कियो विचारा।पीपै छाड्यौ सब परिवारा॥
चले बनारस दीक्षा कारण। सब संशय कौ भार उतारण ॥
सौ असवार साथ में लीने। ता पचगुनै पयादा कीने ॥
सब को दीक्षा जाय लिवाऊं। जो कब हूँ हरि के मन भाऊं॥
रात्रि दिवस करि चलं बहूता। दिना तेरवें जाय पहूता ॥
रामानन्द के मठ चलि जाई। भीतर पैठन पावहि नाई ॥
कहै पौरिया बाहर रहिये। समझैं बूझै बातैं कहिये ॥
को तुम कौन देस तैं आए। भीतर पैठौं बिनहि बुलाए॥
तुम जिन जानौं राज दिवानूं। यह रामानन्द को अस्थानं॥
नर नरिन्द से नाही कामू। निस दिन सुमिरत रहिये रामू॥
पीपौ बोलै हम रजपूता। पश्चिम देशते आये पहूँता ॥
रामानन्द सूं दीक्षा लेही। सीख मानिहै जैसो देही ॥
तब प्रतिहार गयौ करि ठाढ़े। अपनै कर कपाट दै गाढ़े ॥
रामानन्द सू बोल्यो बानी। जो पीपा सूं सुनी कहानी ॥

[दोहा]

स्वामी प्रति उत्तर दियो, और हि गुरु कूं सोध।
मायाधारी राजसी, क्या समझै परबोध ॥

बहुरि पौरियो पौरिहि आयो।अनत जाहु पीपा समझायो॥

लोक महाजन फिरे खंदाई। बामन एक पहूंतौ जाई ॥
मचलौ केरौ झकझोरै। रामानन्द पर माथौ फोरै ॥
पीपा है मेरौ जजमानूं। कै फेरौ कै तजूं परानूं ॥
बहिरौ बूढी मूरख सोई। कथा प्रसंग न जानै कोई ॥
उठि कै पीपा बिनई सेवा। हमकूं आयस दीजै देवा ॥
जौ मांगौ सौ अबही देहौं। जनौ तुमारै संग पठैहौं ॥
गागरोनि मै लीज्यौ जाई। सात लाख कौ गांव लिखाई॥
बामन हठ्यौ न मानै सीखा। तोहि चले बिन लैहुं न भीखा॥
रस मै ठाकुर रस मै नारी। रस मै घोरौ कुरह समारी ॥
आदर हीन कहा धन कीजै। मान घटै काहे कूं जीजै ॥
यह नांही उत्तम कौ धरमूं। सत छूटै जीवैं वेसरमूं ॥
कै मरिहू सिर काटि कटारी। कै धोखै जायौ महतारी ॥
ऐसै करत गयो दिन बीती। बरबट बांभन करै अनीती ॥
खायौ बिख काहू नहीं जाना।रबिके उदय निकसि गये प्राना॥
पीपौ कहै दोष भयौ मोही। स्वामी कछू न लागै तोही ॥
कै जन आज हुतासन जारू। कै सिर काटि कलंक उतारू ॥
ब्रह्म दोष उतरै गौ तबही। ऐसी बात करुंगो जबही ॥
स्वामी हँसे कबीर समेता।हरि बिन मरि मरि जाहि अचेता॥
तोहि पाप काहे कूं होई। अपनी कुमति मरौ जो कोई ॥
तब स्वामी बांभनहि जिवायो।अपने चरन पखालि पिवायो॥
उठि बैठ्यौ जब स्वामी छीयौ। पीपा देखि अचंभो कीयौ ॥

तब रैदास बधाई दीनी। रामानन्द की आरति कीनी ॥
बांभन जानै आई नींदा। हुतो कालिहको खरौ उनींदा॥
खोटो बिस मै खायौ बांटी। गयौ क्रोध तब छूटी आंटी ॥
पीपा कै मन भयौ उछाहू। बिप्रहि बिदा दई घर जाहू ॥
चाल्यौ विप्र न लागी बारा। करै संत मिलि मंगल चारा॥

[दोहा]

बांभन अपनै घर गयौ, स्वामी लागे बाट।
पीपा कै मन सुख भयौ, उघरे हृदय कपाट ॥

❋ चौपाई ❋

सहजे सहजे पहुंचै जाई। चलतां लागा मास अढ़ाई ॥
पहलै परसै हैं जसवंतू। पुनि परस्यौ रुकमनि को कंतू ॥
सब अस्थान देखि मन मांना।गोमति संगम करि असनाना ॥
ऐसी भांति रहे खट मासा। हरि हरि सुमरै औरन आसा॥
तब स्वामी रैदास हि बूझै। कहो कबीर जु तुमहो सूझै ॥
सात पुरी मै कौ अधिकारी कैं लघु दीरघ कै इकसारी॥
तब रैदास कहैं समझाई। मथुरा बड़ो जु वेदन गाई ॥
कबीर बोलै ग्यान बिसेखै। सबै बराबर हमरैं लेखै ॥
देव देहरा तीरथ पांनी। तुम तै बुद्धि कहा है छानी ॥
चलहु गुसाईं काशी जइये। घरही बैठा माधव पइये।
तब रामानन्द कियौ पयानौ। औरहि बूझै आप सयानौ ॥

पीपा पलट द्वारिका आयौ । बिछरत प्रेम अनंत न गायौ ॥
दुसह वियोगन बरन्यौ जाई । फाटैं हियौ न घट मैं माई ॥
दे परदक्षिणा लागौ पाई । मास एक हूं रहूं गुसाईं ॥
पुरी द्वारिका सूं मन मानै । कैसी होइ सु करता जानै ॥
बहुत भांति करि विनती कीनी स्वामी विदा रहनकी दीनी॥
सीता सहित मिले उरलाई । स्वामी सकल भगत गुरुभाई ॥
नैनन नीर बह्यौ परवाहू । पहर एक कोई राखै न काहू ॥
तब स्वामी सबही सूं कहियौ । कहा भयौ जौ पीपा रहियौ॥
तुम जिन जानौ माया मोहू । हरिजन बिछरत प्रेम सनेहू॥
बहुरि चलै पीपा को राखी । तू जनि सीता होय बिलाखी॥
तीजै मास मधुपुरी आये । रहे कछू दिन सब सुख पाये ॥
ता पीछै काशी चलि जांही । अटल भये आनन्द करावहीं॥
पीपा रह्यौ द्वारिका मांझा । सुमरन करै दिवस अरु सांझा॥
एक दिना मन ऐसी आई । अबहूं परूं समद महि जाई ॥
कनकपुरी सागर महिं कहिए।कृष्ण रुकमनी परगट लहियै ॥
ऊपर पानी फिरि गयौ ताही । कोस एक परि नियरी आई॥
कै केसौ कौ दरसन होई । कै तन मगर माछ ले कोई ॥
सीता सहित समद में परियौ जिन देख्यौ तिन हैं हैं करियौ॥
पुरी द्वारका सौही दीसा । कंचन कै झलकै कौसीसा ॥
आगै लैन जनै द्वै आए । कृपा करी गोपाल पठाए ॥
बाट घाट पुर पानी नाही । थलही थल केसौ पहि जाही ॥

जलमहि कहूं न बूड्यौ पाऊं। राखन हारो त्रिभुवन राऊ॥
तन,मन,धन,अरपै हरि काजा।तिनकौ कहा करै यमराजा॥

[दोहा]

सुपनै दुख देखै नही। सदा सुखी हरि संग।
भवसागर ते उतरि कै। फिरही अपनै रङ्ग॥

❋ चौपाई ❋

मिले कृष्ण पूरी मनआसा। भाजिगयौ सब जिनकौ सांसा॥
आदर कर भीतर लै आए। सोलह सहस महल दिखलाए॥
खँभखँभ चित्र मणि हीरा मोती। कोटिकोटि सूरज की जोती॥
देख्यौ ऊसा को भरतारू। रुकमनि अरु प्रद्युम्न कँवारू॥
सज्या पौढे हल धर दीठैं। ऊधौ अरु अक्रूरौ बैठे॥
सीता सहित द्वारिका देखी। पीपै विष्णु पुरी करि लेखी॥
तब हरि पीपहि दियौ प्रसादू। जैंवत लाग्यौ अमृत स्वादू॥
पीपाको मन भयौ प्रसन्नू। यह नांही पहुमी कौ अन्नू॥
ऐसी भांति रहै दिन साता। कृष्ण कह्यौ पूरी भइ जाता॥
अब तुम जाहु जहां ते आए। परचे होहि सदा मन भाए॥
जौहूं राखू अपनै ठाऊं। तौ कि लेय तुमारो नाऊं॥
पीपौ कहै कहां हम जाहीं। लोक बड़ाई चाहैं नाहीं॥
तुमरे चरन शरन सुख पायौ।राखहु सदा रहन को आयौ॥
तुम देखे बिन जाइहि प्राना।सांची कहूं तुम्हारी आना॥

सीता रुदन करै बिलखानी। राखि समीप रुकमनी रानी।।
जब हरि हूं तौ दरसन पायौ। तुममें आस लग्यौ मन आयौ।।
अब हम संगन छाडै काऊ। पीपाहि सरन कृष्ण कै पाऊं।
तब हरि बारबार समझायौ। पीपाहि घटघट ब्रह्म लखायौ।।
हम हिरदै में बसैं तुमारे। दूरि नहीं गुरु ग्यांन विचारे ।।
राखौ कछुक लोक को भाऊ। महिमा जानैं राना राऊ ।।
हांसी करिहै लोग लुगाई। पीपा परचौ समँद में जाई ।।
और भगति करिहैं संदेहू। कहा भयो परमेसर एहू ।।
प्रेम भगति प्रगटी जग जानैं। तुम देखै सब को मनमाने।।
इतनी सुनि पीपा यों कहियौ। स्वामी लाज हमारो बहियौ।।
चलूं तुमारी आज्ञा मांहो खैंचे आवहिं पठवै जाही ।।
अब हम हठ न करैं हो नाथा। देखै तुमही संग हि साथा ।।
आतम दृष्टी पीपा कीनौ। सबही ब्रह्म चीन्हि तिन लीनौ।।
करि दंडोत चले जब दोई। साध-साध बोलै सब कोई ।।
कैसो संग दूरिलौं आयौ। थलही थल में जल न दिखायौ।।
पीपा कहै कहाँ गयौ पान्यौ। हम तौ परत समंदहि जान्यौ।।
तब हरि संसौं कीनौ दूरी। पानी रह्यौ सकल भरपूरी।।
जैसैं सुनिय माँझ ब्रह्मंडा। ऐसै जल महि है नौ खंडा ।।
हाथ न आवै दृष्टि न परई। दांनौ देव अचम्भौ करई ।।
मानस मर्म कहां तें पावै। जो परि मरै सु बहुरिन आवै।।

तू जिन जानै सबको पंथा । अवगति की गति सदा अकंथा ॥

[दोहा]

कृष्ण चलै पहुंचाय कै, पीपै उलघ्यौ नीर ।
सीता सखी समीप है, भीग्यौ नांही चीर ॥

※ चौपाई ※

जलते निकसे बाहिर आए । देखि देखि सबके मन भाए ॥
चरन परसि बूझै कुसलाता । कहौ गुसांई अपनी बाता ॥
नौ दिन रहे समद महि जाई । दसवै दिन कौ गयौ पठाई ।
पानी बूंद न लाग्यौ अङ्गा । टरी नही सतवंती संगा ॥
पर्‌यौ समंदमहिं कौ फिर जीयौ।अधिक रूप सौं अमृतपीयौ॥
भैंरू झाझ लेत नर आई । गिरतहि मगर मच्छ ले खाई॥
कै तुम कृष्ण द्वारिका पाये । कै वैकुण्ठ लोक तै आये ॥
इतने दिन राखे जल माही । नींद भूख व्यापी कछु नाही॥
पण्डित कहत पुराण सुनाई । सो तुम नैननि देखी जाई ॥
कैसो कनकपुरी को राजा । कितनै कोट कहां दरवाजा ॥
अब सब हमसूं कहो गुसांई । करही बीनति लागै पांइ ॥
पीपौ कहै गयौ हूं जबही । पानी बूंद न देख्यौ तब ही ॥
कंचन मंदिर सब इकसारा । सबही रतन करहिं उजियारा॥
बारह योजन कौ विसतारू । राज करैं रुकमनि भरतारू !!
घर घर दान गीत संगीता । जौन पत्यावहु बूझौ सीता ॥

आदर बहुत हमारो कीनौ । महाप्रसाद आपनौ दीनौ ॥
ऊधौ अरु अक्रूर भिटाए । जन्म जन्म के अङ्क मिटाए ॥
देखे हरि हलधर परदुमनू । अनिरुद्ध नाती को निज भवनू॥
कामनि सहित सकल परिवारू जो वरनूं तौ होय पसारू॥
फाल फूल फल कौन बखानैं । और अनेक रङ्ग कौ जानैं ॥
तब हरि विदा हमारी कीनी । राखै नही बिनती कीनी ॥
भगति करो कलियुग में जाई । मेटत रहियौ पीर पराई ॥
पीपौ कहै लाज तौ मरहूं । बहुत बड़ाई अपनी करहूं ॥
तब सबही मिलि कियौ बिचारू । पीपा है ऐसा अवतारू ॥
अचरज भयौ करामति जानी।धनि पीपा धनि सीता रानी॥
बांमन बनिया पूजा करही । चौवा चन्दन चरचित बरही॥
दिन द्वै रहे जातरा लागी । चले देश में आयसु मांगी ॥
साठ कोस पर छठै मिलाना । गहबरबन में मिले पठाना ॥
कछुक विलायत कौ अधिकारी । लेन छुडाई सोता रानी ॥
कहुवे मुंडिया का की जोई । कौन गाव तैं आगे दोई ॥
अबहूं तुमहि बांधि लै जाऊं।नां तर कहौ आपनौ नाऊं ॥
पीपै उत्तर दियौ बिचारी । हूं फकीर यह मेरी नारी ॥
करहि बंदगी करता केरी । जोर करै तौ इच्छा तेरी ॥
कहत पठान मोल दे मोही जो मागै सो देहू तोही ॥
तेरै संग न सोहै ऐसी । राज कुंवारी पदमनी जैसी ॥

सूधोमन करि देहि न मोही। बरबस लैहूं मारूं तोही ॥

[दोहा]

पीपौ पछितावौं करै, हूं नहिं लेतौ साथ।
कहा करूं स्वामी कही, परी असुर के हाथ ॥

* चौपाई *

बाट छाँडि लेगौ बन माही। गहि न सकैसो ताकी बांही॥
और साथ के रहे निनारे। तिन ही मैं पीपा बैठारे ॥
तीस कोस की खरी उजारी।चलि न सकै मारग नरनारी॥
मधुरैं मधुरैं सीत ही बूझैं। काम आधरौ बुद्धि न सूझैं ॥
पाटंबर पहराऊं तोही। रस करि आज रमन दै मोही ॥
सब तिरियान में करहू जेठी। पानी पीवै पलिका बैठी ॥
तेरो बोलन मेटूं काऊं। अपनै हाथ ढारिहूं बाऊं ॥
कहा करै मुंडिया को भरमू। जानै नही भोग का मरमू ॥
तोसी नारि न मांगै भीखा। इतनी मानि हमारी सीखा॥
ऐसो जन्म न खरचै खाही। बहुरि मरै तौ कौनै पाही ॥
सोनै रूपै करि सिंगारू। तोही सौंपू सब भंडारू ॥
परगट काटिन देहूं काऊं। मेरे बल हैं बहू भरि बाऊ ॥
जौंन मानि है कह्यौ हमारा। काटूं नाक न लाऊं बारा ॥
इतनी सुनिकै सीता कांपी। दांत जीभ लै मरिहूं पापी॥

* चौपाई *

सौ सातक सूरज के भाई । ते पीपा सूं रहे रिसाई ॥
काढन कहत नगर ते न्यारौ । याते बिगरत कुटुम हमारौ ॥
सूरजसैन महोत्सव कीनौ।तन मन धन भगतन कूं दीनौ ॥
आधो दरब धरयौ गुरु आगै।बहुरि करै विनती पगलागै ॥
सब सम्पति नारी ग्रह लीजै । स्वामी मेरी संक न कीजै॥
दीन्ही महिखी दीने घोरा । दीने बसतर बहुत पटोरा ॥
ऐसी भांति करै नित सेवा । ज्यू आछो मानै गुरु देवा ॥
रामानन्द की पाती आवहि । बैरागी इत उत पहुचावहि ॥
बहुत बेर पीपौ मिलि आयौ।एकहि सबद अनंत जनायौ॥
अरु सीतहि समीप लै जाई । बहुरी ठोदै फिरि फिरि आई॥
बहुरि सुनौ पीपा के चरिता।सीता सहित भयौ मन मुकता॥
हयबर चढे सरोवर जाही । अस्वै मेलि देइ आन्हाही ॥
दिन द्वै खायौ जौ के खेतू । ताकै धनी कियो संकेतू ॥
सो साकत सूरज कौ भाई । खरो रिसानौ पहुंचो आई ॥
घोरो बांधि आपनो कीनौ । नां इन मांग्यो नां उन दीनौ॥
भीरे महल दुबागी बांध्यौ । गाढौ अधिक पछारी सांध्यौ॥
जागि पहरुवा कीनौ सोरा । पीपा के घर पहुच्यौ घोरा ॥
अपने हाथ छोरि हरि लीनौ।काहु न जान्यौ पीपहि दीनौ॥
पोरि पोरि कै लगे कपाटा । अचरज भयो गयौ केहि वाटा॥

सब सेवग सूं सौंह कराई। काको भेद लूटि घर जाई ॥
कै सूरज कै आए चोरा। महल माझतें लेगये घोरा ॥
ऐसी भांति च्यारि दिन जान्यो।जबजब खेत खात है जान्यो॥
तब कैसौं की लीन परिक्षा। बहुत जतन करि कीनी रक्षा॥
बहुरि न पीपहि दीनौ दोसू। ता दिन तै मन छाडौ रोसू ॥
इतनी कथा कही घोरा की।बहुरि सुनौ महिखी चोरा की ॥
तसकर च्यारि नगर में आए। घातन लागो चले खिसाए॥
पीपा कैं घर बारन बैडौ। मुकति बार वरी मुकतै पेडौ ॥
देखी भैंस पचीसक मोटी। च्यारक बूढी च्यारक छोटी ॥
लीनी हाकि न बूढी छाडो। पीपौ दैन चल्यौ उठ पाडी ॥
लेहु गुसाई निरभै होई। तुम सू बांलि सकै नहिं कोई ॥
तसकर भाजि गए सब दूरी।को जाने भूठी किधौं पूरी ॥
पीपा प्रगट्यौ अपनों नामू। तसकर समझि कियो विश्रामू॥
हमते चूक परी हो देवा। लेहु भैंस अरु करिहैं सेवा ॥
घर फिरि आए दीक्षा लीनी। बहुत भगति पीपा की कीनी॥
साच विना संतोष न होई। पाखंड भगति करै जिन कोई ॥

[दोहा]

भगति करै निरभै भयौ, तज माया की आस।
तब तै दास अनंत कहि, सदा रहे हरि पास ॥

❋ चौपाई ❋

सेवै भगत सदा मन दीनौ । समदिष्टी निज आतम चीनौ॥
एक दिना पीपा गयो गाऊं।भलो महोत्सव भो तिहि ठाऊं॥
भगत एक सूने घर आयौ । तिहि सीता को सबद सुनायौ॥
हूं चीधरोयौ कन्या ब्याहूं । देहु कछु धन तुमसूं चाहूं ॥
इतनो सुनत न कीनी वारा । घोरे भैंसि दिए खगवारा ॥
द्विवस दूसरे पीपौ आयौ । तासूं कह्यौ महा सुख पायौ॥
सूरजसेन रिसानौ भारी । माता कछू न बुद्धि विचारी ॥
सब संपति क्यू एकहि दीजै । पाछै भगति कहा ते कीजै ॥
तब सीता भोरौ करि जान्यौ।प्रीति न चोरी सबद न मान्यौ।
बहुत भीर भगतन की होई । अति आदर सूं देत रसोई ॥
कबहू बेचै गडवा पारी । कबहू आधो बसतर फारी ॥
बडे बौहरै काढौ दीनौ । कह्यौ आपतैं मांगि न लीनौ ॥
तब दीजै जब होय तुमारैं । ना कोई आतुर करै हमारं ॥
कारे टका दिए सो च्यारी । कागद लिख्यौ साखदै भारी॥
छटे महिने मांगे आनी । झगरो कर्यौ न राखी कानी ॥
तब पंचनि मैं पत्र मंगायौ । कोरा कागद नीसर आयौ ॥
सब कागद घर महि के देखै । नूतन और पुराने लेखै ॥
झूठ झूठ कीनौ सब काहू । बहुरि न उत्तर दीनौ साहू ॥

भरी सभा में साह खिसानौ। पीपौ कहै लियो मैं पानौ॥
हरि की संपत हरिजन खाई। तुम जिन झूठो करहू बड़ाई॥
उपजे उपजे देऊं तोही। अपनी करी जौ दीनी मोही॥
तब सुख भयौ साह कै जीया। साखी हरषे अपने हीया॥
अब गति गति को लखै तुमारी। अबकै राखी बात हमारी॥
दरब बहुत को बांटे छीजै। बोल घटे काहै कूं जोजै॥
छांडे साह बडाई कीनो। और मौहर पीपा कूं दीनी॥
महिमा चली देस में भारी। साह गयौ पीपा सूं हारी॥
ता पीछै बनिजारे आए। खैला बूझत फिरत पराए॥
करी मसकरी नाइक वाहचौ। तिन आतुर हो पीपा चाहचौ॥
नाइक कहै वेगि तुम देहू। पीपा वचन सुनायौ एहू॥

[दोहा]

मनो ठगोरी सिरपरी, पीपा बूझ्यौ जाय।
देऊं तुम्हारै बरध है, अगनित कहिए गाय॥

❋ चौपाई ❋

हसि हसि पीपौ बूझै बैना। ए कौनैं काहै नारैनो॥
नाही करूं तो नाही होई। हां हां करत न मानै कोई॥

ऐ बात कठिन है भारी । तब समझावै सीता नारी ॥
इनही के सिर दीजै भारू । तौ साची मानैं करतारू ॥
कहौ भया हो केतक लैहौ । केतक दाम इन्हों के देहौ ॥
हम सौ सात लैहगे नारे । और न छोवै बूढ़े बारे ॥
तुमही जानौ पीपा बोलै । तब गठड़ी बिणजारौ खोलै ॥
दीने दाम जु लेखै आए । खैल्लागोवर दूरि बताए ॥
दिनां तीसरे लीज्यौ आई । तौ लगि हम राखिहै मंगाई ॥
ताकी साखि न दीनौ कोई।गयौ बिणजारौ निधरक होई॥
चहूं देश पीपैं दल दीनौं । भगत बुलाय महोत्सव कीनौ॥
तिहि औसर बनिजारौ आयौ।देखि दरस मनमें सकुचायौ॥
ठौरै ठौर कीरतन होई । भांति भांति की तपै रसोई ॥
वैरागी न्यारे गुण गावहि । ते भगवत को अलग रिझावहि॥
बाढ्यो रंगु भयौ सुख भारी । केतक भूलि रहै नर नारी ॥
पीपा नायक लियौ बुलाई । लेहु आपनै नारे आई ॥
ए देखौ वैरागी वैसे । एई बरद हमारे ऐसै ॥
मन माने ते लेहु निवेरी । और हमारे गाय न छेरी ॥
बनिजारौ बोलै कर जोरै । मै तुम सूं ढीठ्यौ दइ भोरै ॥
भलै हि खरच्यो दरब हमारौ । हूं जानत हूं नांव तमारौ ॥
गागरोनि को पीपा राऊ । माया तजि टोडै महि आऊ ॥
अब हम ऊपर कीजै मोहू । और लैहु कछु बकसो कोहू ॥

पीपौ कहै तुमारौ भागू । भगत पूजि के लेहु सुहागू ।।
तब नायक मन उपज्यौ भाऊ।बसतर बहुत मोल ले आऊ।।
ते पहिरावत संक न कीनी । पाछै विदा सबन की कीनी।।
बनिजारो अपने घर जाई । पीपहि दूनी चढ़ी बढाई ।।
मूरख लोग न जानैं भेऊ । पीपा पूजै आतम देऊ ।।
परमारथ की जानैं रीती । निस दिन पारब्रह्म सूं प्रीती ।।
भगति करै तन मन धन अरपै।सब तै निडर सांगतै डरपै ।।
काम क्रोध मद मच्छर नाही । लोभ मोह के संगन जाही ।।
सीता सबदि न मेटै काऊ । राखै पतिव्रता को भाऊ ।।
राग दोष दुवध्याते न्यारे । सत्रु मित्र सम दोऊ प्यारे ।।
अति उदार पर पीरहि काटै।सबद कसौटी देत न फाटै ।।
अभिअंतर निरमल हैं दोऊ । भाय अभाय कछु कहौ कोऊ ।

[दोहा]

बार बार वरने कहा, सुख संतोष अनंद ।
निरगुन सू परचो भयौ, छूटे भव के फंद ।।

❋ चौपाई ❋

बहुरि सुनौ सीता के साचै । जिहि विध भगतन आगे नाचै।।
पीपौ गयौ महोछव जबही । भगत सौक मिलि आए तबही।।

घर मैं कछू न दीसै नाजू । कहा करैं परमेश्वर आजू ॥
सब नटि गए उधार न पाही । अरु गहना धरिवेकूं नाही ॥
एक बानियौ विखई भारी । तिहि बतराई सीता नारी ॥
एक निसा समीप रह मोही । जो मांगै सो देहूं तोही ॥
भली बात यूं सीता बोली । बदी सेहट हाट तब खोली ॥
बनिया कै परतीति बढाई । सीता कीनी राम दुहाई ॥
तब ताकौ मन भयौ उदारा । पुरई बसत न लागी बारा ॥
जो चाह्यौ सो दियो तुरन्तू । एकहि बसतु न आवै अन्तू ॥
करी रसोई भगत बुलाए । तिहि औसर पीपा नहिं आए ॥
सीता बात कही समझाई । पीपा रीझयौ वंदै पाई ॥
वासर गत रजनी पैसारू । सीता सती कियौ सिंगारू ॥
निस अंधियारी बरसै मेहा । सीता चली साह के गेहा ॥
चली अकेली पीपौ खीझै । कीच भरै पग साह न रीझै ॥
खरौ सयानौ फेरै तोही । तब तूं मनमैं बिलखी होही ॥
परमारथ लगि बुद्धि उपाई । पीपै लीनी कन्ध चढाई ॥
ऊपर ओढी कामरि कारी । लै बनिया की पौर उतारी ॥
खोली कपाट भीतर पैसी । पीपा रह्यो उसारे बैसी ॥
दीपक बरत हुतो घर मांही । उठिकै बनियौ लागो पाही ॥
धनि धनि माता वाचा पूरी । प्रेम भगति परमारथ सूरी ॥
तू जननी मैं बालक तेरा । अबकै औगुन बकसौ मेरा ॥

पाटंबर पहिरावनि आनी । गयौ कपट जननी वर जानी॥
बनियां बूझै कहुरी माई । स्रुके पग तू क्यूं कर आई ॥
सीता सकुची उत्तर दीनौ । डरपि नांव पीपा कौ लीनौ॥
बर वट आनी कंध चढाई । बाहिर बैंठो देखो जाई ॥
तब उठि बनियां लागौ पाई । चूक हमारी वकसि गुसांई॥
करुना करै जीव में भारी । मैं माता कूं दीनी गारी ॥
अब तुम हमको दीक्षा देहू । भगति सिखैं अपनो करि लहू ॥
पीपौ कहे खेल जिन जानौ। सबते बडौ भगत कौ बानौ ॥
यह नांही सकुची को कामू । सरबस अरपैं कहिए रामू ॥
इतनी बात कही सँग जाई । सीता पीपहिं घर लै आई ॥
बनिक हि राति न आई नींदा।उठि आयौ परभात उनीदा ॥
पान मिठाई लौंग सुपारी । और भेट आनी भरि थारी ॥
तारक मंत्र सुनायौ ताही । सुमिरन कीज्यौ और निवाही॥
हरि भगतन की सेवा कीज्यो।आदर करि करि सरवस दीज्यो॥

[दोहा]

गुरु पूजा कौ हठ कियौ, लाग्यो दैन विसाहु ।
जौ पीपा को चाहिये, दिन दिन पुरवै साहु ॥

जब तो विपति सराहै कोई । तो साची पतिवरता होई ॥
आंधौं बहरो नकटो बूचो । ज्वारी भंगी अधम असूचो ॥
ललो दँतलो कोढी कारौ । सूम दरिद्री बूढौ बारौ ॥
सदा कुबचनी रोगी भूठौ । कामी क्रोधी रहै जु रूठौ ॥
सुरापानि अरु मांस अहारी । वेस्यारत, रत पर की नारी ॥
सिवरे दांत कूबरो कानौ । लहसन आदि ते वरन बखानौ ॥
अमलि कुचोल कुरूप भिखारी । हीन आलसी मूरख भारी ॥
गहना चोर चुगल मन रंगी । चेटक चपल नीच को संगी ॥
अधिको सोवे अधिक अहारू । निंदक निरबल करै विचारू ॥
गूंगो खंडो खंडित अंगा । द्वेष होय कुटुंम को भंगा ॥
घने अलच्छन पारन पाऊं । कथा बढै जो बहुत सुनाऊं ॥
एसे पति सूं देही गारी । सो कहिए पतिवरता नारी ॥
जोगी जती तपी सन्यासी । जैसो भेष धरै जो दासी ॥
कबहु न करे कंत सूं रोसू । कुवचन बोलि न लावै दोसू ॥
थोरो सोवै थोरो खाई । मानै नाही सीख पराई ॥
दया दीनता सरल सुभाऊ । पतिवरता कौ यहै बनाऊ ॥
पर तिरिया कौ नाँव न धरहीं । नागे भूखे लाज न करहीं ॥
भूखै भोजन देय बुलाई । जो भरता की आग्या पाई ॥
आप मुरादै कछू न करई । पति कै सवद लोक ब्योहरई ॥

मांनै नहीं कंत कौ दोखू। सो पतिव्रता पावै मोखू ॥
जैसे भगति राम की कीजै। तैसे मन भरतारहि दीजै ॥
टौना टामन लियो सुहागू। सो नाही पूरबली भागू ॥
गुन करि बस कीजे भरतारू। तौ साचो मानै करतारू ॥
मन की जानैं सरधा राखैं। सदा निगरव झूठनहि भाखै ॥
मुखतैं काढै अमृत वानी। ताकी महिमा त्रिभुवन जानी ॥
इतनी पतिवरताकी करनी। और बाद कहिजै घर घरनी ॥

[दोहा]

संपति विपति न जान है, करै कंत की सेव।
सो पतिवरता जानिए, लखै सबद को भेव ॥

❋ चौपाई ❋

सूरज को मन भयौ अचेतू। पीपौ चल्यौ करावन चेतू ॥
ठाढै जाय भयौ दरबारा। तब प्रतिहार जनाई सारा ॥
सूरज सन करै जहाँ पूजा। तन हरि सूं मन मैं कछु दूजा ॥
कहै पोरिया सुनिहो राई। पीपौ पोरि पहौंच्यो आई ॥
मोसूं बात कही सो मानौं। कै फैरो कै भीतर आनौं ॥
सूरज कहै बेगि लै आवौ। मेरौ हरि पूजा सूँ भावौ ॥
इतनी बचन पौरिया पायौ। सो पीपा पहँ तब ही आयौ ॥

चलौ गुसाईं बोलै राई। पूजा करत न छोडी जाई ॥
पीपौ वचन कह्यौ तब ऐसो। सूरज है मोची कै वैसो ॥
झूठी पूजा झूठा जापू। मोजा गाँठै बैठ्यौ आपू ॥
इतनी कहि पोरिया सुनाई। सूरज आगैं प्रगटी जाई ॥
तब सूरज आपुन चलि आयौ। चरन परसि कै भेदजनायौ ॥
मोहि खरी ल्हसकरको कामू। आतुर पूजे सालिगरामू ॥
मन मोजा मैं रह्यौ समाई। सो मेरी मति स्वामी पाई ॥
मोजा है मोची की हाटा। कब आवै हूँ जोऊँ बाटा ॥
इतनी चूक परी मैं जानी। सालिगराम न पूजा मानी ॥
चलौ गुसांई भीतर वैसो। हम सूँ तुम सूँ परदा कैसो ॥
तुम स्वामी हम सेवक तेरे। जैसौ मोल लियौ पटचेरे ॥
वचन तुम्हारौ मेटैं नाहीं। जो बेचै तौ हाट विकाहीं ॥
अब तुम का को संका मानी। इतनी हम कुमया करि मानी ॥
बूझै भीतर करहु प्रवेसू। तुम ही हम हि दियौ उपदेसू ॥
स्वांग धरै जो आवै कोई। तासूं कैसा परदा होई ॥
हम घर होहिं कि बाहिर जांही। निधरक बैठो मंदिर मांही ॥
तुम हम ऊपर राखहु भाऊं। मन मानै तब धारौ पाऊं ॥
जैसी कृपा सदा है कीनी। जा दिन ते तुम दीक्षा लीनी ॥
तैसी करौ निवा हो वोरा। तुम समरथ हूं मति को भोरा ॥
हम ते चूक परी बहु भाती। सो सब तुमरै पेट समाती ॥

आज हमारे दोष नसाए । भाग बडे घर बैठे आए ॥
बोलि बोल आप ही बधावै । ताकूं दूजौ कौन छुडावै ॥
इतने सुनि सूरज के बैंना । पीपा लाग्यो दीक्षा देना ॥
मुँह की मिलिवै मन महि सोचू। कबहू निरमल कबहू पोचू ॥
पीपै कठिन कसौटी दीनी । सूरज सकुचि मान तब लीनी॥
मांगी कामनि हुतो वांझा । पीपा पठयो गवर मांझा ॥
सूरज के मन उपजी संका । बरजन चल्यो फेरि मन रंका॥
मन बच करम नही अंतर की । जती कहो सु कंठ उपर की॥

[दोहा]

जितनी मुखते नीकसै, इतनी करै न कोय ।
जो कोइ करै तो हरि मिलै, आवागमन न होय ॥

❊ चौपाई ❊

जब ही सूरज भीतर गयऊ । तब ही पीपा नाहर भयऊ ॥
बहुरि भाजि कै बाहिर आयौ। सभा मांझ पीपा समझायौ ॥
छिन भीतर छिन बाहिर जाई। इत पीपा उत नाहर खाई ॥
बालक रूप भयो है पीपा । पौढ्यौ देख्यौ नारि समीपा ॥
अस्तन पान करत है सोई । वह जननी वह बालक होई ॥
बांझ कामनी रूप अपारा । पीपा मनहुं गरभ औतारा ॥

ऐसो अचरज देख्यो भारी । जनु साचे बेटा महतारी ॥
सूरज सेन जाइ पग लागो । मन महि भरम हुतौ सो भागो ॥
द्वैकर जोरै विनती करई । अति भै व्याप्यौ मन महिं डरई ॥
कै सनकादिक कै नव जोगी । कै परचेता आए भोगी ॥
कै तुम देवहूति के पूता । कै अनुसूया सुत अवधूता ॥
कै तुम व्यास पुत्र सुकदेऊ । हम आंधरे न जाने भेऊ ॥
सूरजसेन चरित यूं देखा । पीपौ भयौ आपनै भेखा ॥
बारबार बोलै अकुलानौ । हूं तौ माया मोह भुलानौ ॥
स्वामी नैंन हमारे आंजौ । जनम जनम की दुरमति भांजौ ।
पीपा तबही परसन भयऊ । ग्यान सुनायौ संसौ गयऊ ॥
गुरु गहलौ गुरुवाउर होई । सिष्य सयानौ तजै न सोई ॥
गुरु की निंदा सुनै न काना । ऊठि चलै कै मरदै माना ॥
गुरु अपनै कौं सरबस दीजै । जीवन जनम सुफल करि लीजै ॥
गुण गहिए औगुण परिहरिये । इहि विधि सेवा गुरुकी करिये ॥
तब गोविन्द सदा सुख पावै । अरु भगतन सूँ हेत बढावै ॥
गुरु गोविंद भगत की पूजा । ता सम धरम नहीं कोउ दूजा ॥
गुरु की निंदा करै जु कोई । कुंभीपाक परैगो सोई ॥
इतनी कहि सूरज समुझायौ । पीपा अपनै मंदिर आयौ ॥
ता पाछे तेली कौ वरदा । पीपै दान दियो करि सरधा ॥
पानी पीवन तरलहि गयऊ । बालक एक संग पठयऊ ॥

पीपौ करन गयो असनान् । पंथी बांमन मांगै दान् ॥
हूं परदेसी जाचूं तोही । पीपा भगत कछु दै मोही ॥
तब तेली को वरध बतायौ । बालक रुदन करत घर आयौ ॥
बांमन बोलै बैल परायौ । मोहि न काहू पास मरायौ ॥
पीपौ कहै रांम की माया । तोहि कहा डर करि हैं छाया ॥
जो मांगै सो हम से मांगै । बांमन तोहि कछु नहि लागै ॥
जिन काहू की संका मानैं । तूं निसंक जावहि जित जानै ॥
जा कौ बैल ताहि मैं दैहूं । तेरो कबहू नाम न लैहूं ॥
इतनी सुनि बांमन लै जाई । पीपैं मन परतीति बढ़ाई ॥
करि असनान भगत घर आयौ । बालक बापु जाय गुहरायौ ॥
पीपै वरद हमारो लीनौ । बरबस लै काहू कौ दीनौ ॥
मैं देख्यो बांमन सो आंखी । तहां दोय जन औरहु साखी ॥
तेली दौरि दिवान हि जाई । सूरज आगे विनय कराई ॥
पीपा ताल करै अंग होरी । वरद हमारो लियौ अजोरी ॥
बालक गयो पियावन पानी । ताकी कछू न कीनी कानीं ॥
बांमन एक बटाऊ कोई । ताहि दियौ बालक रह्यौ रोई ॥
अब हूँ कुटुंब जिवाऊं कैसे । घानी बिन क्यूं सरि है वैसे ॥
जाको लीनौ मोल उधारौ । सो मानस बेचि है सकारौ ॥
गांठी दाम हमारी नाही । करै मजूरी तब ही खाही ॥
इतनी सुनि के सूरज बोला । ताहि बरद लैदैहौं मोला ॥

रहिरे तेली जिन पछिताही । बार एक स्वामी पहिजाही ॥
तब तेली पीपा कै गयऊ । विनती करि कै बिलखो भयऊ ॥
जो फिराद सूरज सूं करिया । सो स्वामी आगे ऊचरिया ॥
कुटुंब सहित तेली बिलखाई । स्वामी कै मन करुना आई ॥
देखौ जाय आपनै गेहू । पीछे हम कूं दूसन देहू ॥
पूठे बँध्यौ तुमारौ बैला । काहै कूं मन कीयौ मैला ॥
इतनी सुनि तेली घर जाई। देखि बैल सीतल मति आई ॥
बाही भांति सबैं सहिदाना । औरैं रचि दीनो भगवाना ॥
जिन यह सगरो करचो पसारा। करता करत न लागी बारा ॥

[दोहा]

ऐसो हरि को सरन है, जो कीजै सो होय ।
दास अनंत न छांडिए, राम कहो सब कोय ॥

❀ चौपाई ❀

एक दिना पीपा के द्वारे । बहुत भगत बैसे भिनसारे ॥
गुजरी एक दही लै आई । पीपैं स्वामी लई बुलाई ॥
कहिरी माता याका मोलू । हौं न मेटि हूं तेरो बोलू ॥
तब उन कही दुगानी तेरह । इतने को है मथना मेरह ॥
पीपा बाल बचन भलेरी । आज भेट आवै सो तेरी ॥

सब काहू मिलि थापी ऐसी । स्वामी बात कही है जैसी ॥
आदर कर गुजरी बैठारी । दधि पीवत पायो सुख भारी॥
नाचै गावै करै अनंद । देखि देखि रीझै गोविन्द ॥
तब ही एक बानियौ आयौ । तिन स्वामी कूं दरब चढायौ ॥
पांच मुहर अरु द्वै परकाले । कछु मोती कछु खुरदा घाले ॥
खांड चिरौंजी गिरी छुहारी । केसर कपूर लौंग सुपारी ॥
इती भेट धरि लागौ पाई । अब घर हूं पैसिहूं गुसांई ॥
लादन गयौ समद कै तीरा । बहुत वस्तु बनिजी अरु हीरा॥
बिढतौ भयौ सरयौ सब काजू । बरस तीसरें आयौ आजू॥
पहले दरस तुमारौ पाऊं । ता पीछे अपनै घर जाऊं ॥
याही नगर मांझ घर मेरो । सेवा करौं तुमारो चेरो ॥
गयौ बानियौ आग्या दीनी । स्वामी सौंज एकठी कीनी॥
लैरी बहन दही को मोलू । राख्यौ राम हमारो बोलू ॥
डरपी गुजरी छुवै न हाथा । नाहीं करै डुलावै माथा ॥
दधि को मोल देहु जो आवै । राजा दंड लेय सुनि पावै ॥
इतनी हम हि खान को दै है । सूरज सेन चौगनी लै है ॥
तब स्वामी बोले सत भाऊ । तोहि न राजा दंडहि काऊ॥
तेरे काज तहां हूं लरिहूं । राम दुहाई उपरो करिहूं ॥
इतनी सुनि के हरखी नारी । बारहिबार करी मनुहारी ॥
इनको वेगि महोच्छव कीजै । और कछु हम हो सूं लीजै ॥

पीपौ कहे मोहर लै माई। तेरेहि भाग भट है आई ॥
मेरो बचन झूठ जिन पारै। सत छोड़े परमैसुर मारै ॥
अपने घर लेकर जो भावै। जाते बहुत प्रतिष्ठा पावै ॥
तब गुजरी मन कियौ विचारा। दीक्षा लेत न लाऊं बारा ॥
बसतर मुहर आपनी कीनी। और सौंज भगतन कूं दीनी ॥
ता पीछे अपने घर जाई। समाचार सब कहे बनाई ॥
कंत सराहै कुटुंब सिहानौ। हरिभगतन सूं मन पतियानौ ॥
पीपा स्वामी लियौ बुलाई। दिवस दूसरे भगति कराई ॥
गुजरी गहबर दीक्षा लीनी। हरिभगतन की पूजा कीनी ॥
तब तै पीपा कै मन भावै। दिन उठि गोरस घर पहुंचावै ॥
सब संतन सूं राखै भाऊ। आग्या बिना न धारै पाऊ ॥

[दोहा]

ऐसो दरसन साधु कौ, सब को कारज होय।
जिन संगति कौ सुख लह्यौ, दुख नहि पावै कोय॥

❊ चौपाई ❁

बांमन एक नगर मै ऐसौ। अतिग्रब ंत कहत है जैसौ ॥
धन जोबन कुल कुटंब सजूता। सकल सौंज देखिए बहूता ॥
जिन माता कौ होम करायौ। बिप्र सहित सब कै मनभायौ।।

करी वेदविधि सरधा भारी । बहुत लोग न्यौते नरनारी ।
सौ पीपा कूं न्यौंतन आये । मानै नहीं बहुत समुझाये ।।
पापी कहै कह्यौ करि मेरी । तौ हूं न्यूतो मानूं तेरी ।।
बांमन बोलैं घर लै जाऊं । अबहू तेरे मनहि मनाऊं ।।
जैसी भांति रसोई कीजै । सोई आयसु मोकूं दीजै ।।
इतनी सुनी पीपा चलि जाई । देखि रसोई बुद्धि उपाई ।।
थोरे थोरे थारी भरहू । आनि अछूतो आगे धरहू ।
पहलै रामहि भोग लगाऊं । ता पीछे हूं जूठन खाऊं ।।
सुनत बात सबके मनमानी।अवगति की गति किनहूं न जानी
तनक तनक सूं भरलई थारी । और रही मंदिर महि डारी ।।
जितनौ पाक भयौ घर माहीं।दियौ अछूनौ करी न काहीं।।
वेदि मांझ बैठि सब खायो । दूजो भगत न कोई आयो ।।
पीछै बांमन कियौ अहारा । लोक सजन अरु मंगणहारा।।
सब दिन भूखे भोजन दीनौ।अपनै जान यज्ञ उहि कीनौ।।
निसा भए सोए नरनारी । सपनै माता दीनी गारी ।।
अरध राति उपरी चलि आई । भूखी भूख भूख बिललाई ।।
मेरे कारन कीनौ जग्गू । पीपा स्वामी करि गयो भग्गू ।।
जब ते भोग लग्यो भर थारी।तबही तै हूं मारि निकारी।।
भली भई परमसुर पायौ । तूं जिन जानै माता खायौ ।।
हरि सूं बल करि सकै न कोई । हम कूं साथ न रही रसोई।।

इतनी कहि देवी घर जाई । बांमन जाग्यौ मन पछिताई ॥
पीछै पीपै कियौ बिचारू । लोक बडाई सिरपर भारू ॥
अबहूँ अपनो मान मिटाऊँ । कतहूँ रमन अकेलौ जाऊँ ॥
दूजो साथ न लीजै कोई । सुख अरु दुःख बराबर दोई ॥
कह्यौ सिया सूँ ऐसो मरमू । तूं जिन मन मैं आनै भरमू ॥
गयो एकलो जात न जान्यौ । बाट घाट भगतन पहिचान्यौ ॥
ते लै गये आपने गेहा । दिन दिन दूनौ करहिं सनेहा ॥
बहुरि विदा करि पूजा कीनी । गाडी एक नाज भरदीनी ॥
औरों दिए सबनि भरि दामा । बांधो कबहूं आवै कांमा ॥
बस्तर बहुत भेट के आए । कछु पहरे कछु ऊपर छाए ॥
स्वामी आप सांथ ही भइया । दूजोंकोइन साथ न लइया ॥
चले आपनी घर की बाटा । चोर च्यारि रूंधौ है घाटा ॥
तिन ही गाडी लई छिनाई । पीपा बहुरि पयादौ जाई ॥
तस्कर दूरी गए जब जानै । स्वामी परमहितू करि मानै ॥
आज भई मेरे मन भाई । पाछै सुध बसनी की आई ।
दोरयौ दैन लऊजू एही । तुम हो मेरे परम सनेही ॥
चूक परि मैं बांधे राखो । जब ही गाडी मांझन नाखी ॥
अचरज करै चोर सुनि बाता । ऐसी कहून भई बिधाता ॥
कोतूं आहि कहां ते आयौ । बहुत करै चोरन कौ भायौ ॥
पीपा भगत कहत है ऐसो । सब को सदा भलो तूं जैसो ॥
मोहर बतीसक देखी छोरी । बाहुरि बांधी गांठि मरोरी ॥

तोहि सौंह जौं साच्चन भाखै। अब जिन हम सूं परदा राखै॥
कौन धाम को तेरो गाऊँ। कौन सौ देस कौन सौ नाऊँ॥
तब हँसि बोलै पीपा स्वामी। तुम हो माहैं अंतर जामी॥
हूँ पीपा परमेसुर सेऊँ। हरि के हेत काटि सिर देऊँ॥
दान धरम की कौन चलावै। मेरो मरम न कोई पावै॥
सब काहूँ अपनौ करि जानौ। खरचत खात बुरौ नह मानौ॥
इतनी सुनत चौर पग परही। हाथ जोरि कै अस्तुति करही॥
गाडी बसनी दीनी फैरी। हम क्यू माया राखैं तेरी॥
दीक्षा दीजै सेवा करही। और भेट लै आगै धरही॥
तिन कै माथै दीनौ हाथू। पीपौ चल्यो न चाहै साथू॥
अब जिन काहूँ लूटौ मारौ। इतनौ है परबोध हमारौ॥
आए सदन भयौ कह राऊं। हरखी सीता परसै पाऊं॥

[दोहा]

सुख संपति संगहि फिरै, जित २ हरिजन जाय॥
ताकै तन डर कौन को, जाकै राम सहाय॥

* चौपाई *

बहुरि कही सीता सूं ऐसी। तूं सुमरन करियौ घर बैसी॥
अब हू श्रीरङ्गजू कै जाऊं। दिन दस भगतन मैं फिरि आऊं॥

चीठी च्यारि संदेसे आए। श्रीरङ्ग लिखि लिखिके अघराए॥
तुम काका गुरु दरशन देहू । हमकूं छाडत बने न गेहू ॥
द्यौसा नगर कहत है नीकौ । भरम भगाऊँ बाके जीकौ ॥
चल अकेले वार न लाई । दिवस पांच मैं पहुँचे जाई ॥
निरगुन रूप कमंडल हाथा । सेवग सीख न कोई साथा ॥
पूछत पूछत घर में पैठे । श्रीरंग जहां पूजा कूं बैठे ॥
लाग्यौ ध्यान पलक हैं मीचे । पीपा रहै चौंतरा नीचे ॥
मनसा ही महि कियौ सिंगारू । पहरायौ फूलन कौ हारू ॥
रह्यौ कानही कंठ न मेल्यौ । तौलगि चित्त अनतही खेल्यौ॥
पीपा कहै कंठ पहिराऊ । पूजा करत न मनहि रुलाऊ ॥
श्रीरंग ने जब आंखि उघारी । दरसन देखि भयौ सुखभारी ॥
यह को बोल्यौ बानी आछै । बैठौ कहा पीठ कै पाछै ॥
हाथ जोरि पूछो कुसलाता । कहौ गुसांई अपनी बाता ॥
को तुम अहौ कहांते आए । मया करी मेरे मन भाए ॥
तब स्वामी बोलौ अकुलानौ । बूझै कहा भगत कौ बानौ ॥
माला तिलक राम के नाते । सबकी सेवा कीजे याते ॥
जाति पांति कुल भेद न कीजै । दरसन देखै सरबस दीजै ॥
भजन अभजन जांनि पहचानी । याते होय भगति मैं हानी ॥
गुन औगुन मन धरे न कोई । ताकी भगति सुनिहचल होई॥
विष्णु समान मानिये दासू । ताकौ राम न छांडै पासू ॥

और काहु सूं बैर न कीजै । सकल आतमा भोजन दीजै ॥
जो कबहू सम दिष्टी होई । ता सुख ऊपर और न कोई ॥
हूं पीपा टोडे तै आयौ । भली भई जो तू घर पायौ ॥
देखी भगति रीति हरि पूजा । नांहो और धरम कोउ दूजा ॥
श्रीरंग जू पग लागो धाई । आज हमारे नौ निधि आई ॥
बूझे विनको जाने मरमू । लघु दीरघ मन मिटे न भरमू ॥
काहूं मिलत होय मन ऊनो । काहू मिलत भाखिये दूनौ ॥
तुम अगाध अगाध में डारौ । केतक है उनमान हमारौ ॥
अलप नदी के पैरनहारा । नाहो गए समन्द के पारा ॥
भगति करै अपनै उनमाना । जब लग उपजै ब्रह्म ग्याना ॥
ऐसे काह आए स्वामी । भले ही हौ तुम अन्तर जामी ॥
आदर बिन सब सेवा फीकी । जानै कौन हमारे जीकी ॥
अब तुम जाय बाग मैं वैसौ । करूं महातम कहिए तैसौ ॥
गयो बाग मैं पीपौ तवही । सोधौ दियौ श्रीरंग सबही ॥
जितनै भगत नगर मैं रहते । ताल पखावज बीना गहते ॥
ते सब सिमिटे लगी न वारा । कामिनी गावैं मंगलचारा ॥
बस्तर फूल सुगंध मिठाई । नाचत गावत पहुँचे जाई ॥
कर दंडवत मिले उर लागी । त्रिविधि ताप दरशन ते भागी
पूजा कीनी घर लै आए । लोग नगर के देखन धाए ॥
करि सकल विधि आनंद भयऊ । देखत गरब सबनको गयऊ ॥

मन ही में माला पहिराई । श्रीरंग बूझी सो अरथाई ॥
पीपौ कहै प्रगट मैं देखो । सुनि २ करे बिचार विवेका ॥
श्रीरंग और जू पीपा स्वामी । दोऊ कहिये अंतरजामी ॥

[दोहा]

ऐसे परचे को गिनैं, हरि के चरित्र अपार ॥
एक भगति के भेद बिन, कोउन जानै सार ॥

❋ चौपाई ❋

दिन २ प्रीति करे अधिकाई । पीपौ दिन २ न्यौते जाई ॥
बैठन जाहि ताल की पारी । निरमल कथा कहै निरधारी ॥
गैटलाब आछौ अस्थानू । जल फल फूलनि बडो विधानू ॥
श्रीरंग ने पीपा सू भाखी । अपनी सकल पाछली साखी ॥
हू बानियौ सरावग धरमू । जानू नाहीं भगति को मरमू ॥
सोनौ रूपौ हीरा बेचू । बढतौ होंय दरब सब संचू ॥
बडो जोहरी परखुं हीरा । जानूं कछु न पराई पीरा ॥
रह्यौ एक रहतवा हमारे । आई मीच गयौ जम द्वारै ॥
तब जम राज कियौ जमत्रौहू । किंकर साथ करै अतिकौहू ॥
जनै च्यारि बारद मैं आए । मैं मारग में बैठे पाए ॥
हूं परभात होन सुचि आयौ । दूरि देखि रहतवा बुलायौ ॥

मेरे मन अचिरज भौ भारी । मिटी नहीं पहिली उणहारी ॥
बैही आप करी पहचानी । हूं पतियानौ बात पुरानी ॥
सब ठिकु मिलियौ लागौ पाई । अब हौं जम कौ दूत गुसाई ॥
अपनी कथा कही समझाई । और बडी परतीति जनाई ॥
देख तमासौ एक हमारौ । आए लैन बडौ बनिजारौ ॥
जैसी भांति मारि लै जाहीं । तोहि दिखावहि औंरहि नाहीं ॥
टांडो चलत घरी द्वै भयऊ । किंकर पैठि बरद में गयऊ ॥
कारै बरन बडौ असथूला । क्रोध करै हो केतक भूला ॥
डारी गौन सांमुहै धावै । कोइ धिग पकरन नहिं पावै ॥
और बैल ठेलो गिर जांही । मानुस कौ बल लागै नाही ॥
गह्यौ न जाय रहे सब हारी । काल रूप लागै डर भारी ॥
तब रिसलागी नाइक बेटै । आई मीच न कोई मेटै ॥
घोरौ छोड़ि पयादौ धायौ । मानै नहीं बहुत समुझायौ ॥
सब काहू कूं गारी देई । मारन कूं हथियार करलेई ॥
पकरन गयो बैल कूं जबही । पैठो सींग पेट में तबही ॥
घरी एक ऊपर ही राख्यौ । छूटे प्राण बहुरि भै नाख्यौ ॥
चारूं जम लै चलै जु बांधी । प्रगट हि देख्यौ तब सुध लाधी ॥
तब हूं डरप्यौ बूझ्यौ चेरौ । कौन हवाल होयगौ मेरौ ॥
कही बरतिया बात बिचारी । हरि की भगति बिना दुखभारी ॥
काहू बांधि नरक मै डारै । बाहिर निकसे मुगदर मारै ॥

काहू बरते थांभ भिटावे । करै पुकार न पीर मिटावे ॥
काहू लख चौरासी डारै । काहू तेल कडाही जारै ॥
और सासना बरनूं केती । जम के द्वारे बरनी जेती ॥
हरि भगतन कौ आदर करई । बोले नही देखि जम डरई ॥
मेरी सीख मानिहौ देवा । कीज्यौ जगन्नाथ की सेवा ॥
इतनी कहि जम किंकर जाही। मैं विचार कीनौ मन मांही॥
गयौ मधुपुरी बार न कीनी । अनंतानंद सूं दीक्षा लीनी ॥
तब ते भगति करूं चितलाई । छांडी सगरी लोक बड़ाई ॥
जाति पांति कुल कुटुंब न चाहूं। राम राम जपि और निबाहूं॥

(दोहा)

जम कौ डर मानै नहीं, जीव पर्यो जंजाल ।
राम कहै ते ऊबरे, और भए बेहाल ॥

❋ चौपाई ❋

बहुरि कहूं अचरज की बाता । सावधान ह्वै सुनियौ ताता॥
मेरौ बेटो अपनै गेहा । करै नहीं नारी सूं नेहा ॥
दिन दिन दुरबल होय सरीरा। लाज मरै कछु कहै न पीरा ॥
एक दिना मैं बूझन लीनौ । साचौ साचौ उत्तर दीनौ ॥
भूत एक आवै अधराती । मुखतै कछू न काढै बाती ॥

ताहि देखि हूं खरौ डराऊं । कहिनमकूं मन में दुख पाऊं ॥
ताकै घर हूं सूतो जाई । भूत मास हौं पहुंच्यौ आई ॥
मै मारकूं पनही लीनी । उन करि जोरि बीनती कीनी ॥
हूं अपराधी कलपत मूवौं । परनारी लगि राखस हूवौ ॥
पूरब जनम सुनार बडेरा । अब मैं लियो आसरो तेरो ॥
मास एक ते दिन हो आऊ । दीक्षा देहु परमगति पाऊ ॥
तब तुलसी चरनोदक दीनौं । अति सरधा सूं राखस पीनौं ॥
कान लागि मैं मंत्र सुनायौ । पाई मुक्ति न कबहूं आयौ ॥
कह्यौ जु श्रीरङ्ग सगरो मरमू । ऐसो बडो भगति को धरमू ॥
पीपै कथा सुनी चित लाई । तिहि औसर कंडहरी आई ॥
द्वै सुपचनी कडैरा बीनै । अति सुरूप सब कौ चित छीनै ॥
बीनत बीनत नेरी आई । पीपै अपनै पास बुलाई ॥
श्रीरङ्ग उठिके चलै रिसाई । तू कांमी विखई अन्याई ॥
नीच जाति अरु नारि पराई । संगति करै न होइ भलाई ॥
पीपौ कहै पराई नाहीं । समुझि देखि अपने मन मांहीं ॥
पांच तत्त्व को सकल पसारा । एकहि राम उपावन हारा ॥
वैर करे तो दीसै दोई । स्वारथ छाडै ऐकै होई ॥
बाहु पकरि पीपै बैठारयो । श्रीरंगजू को क्रोध निवारयो ॥
बहुत कथा कहि कहि समुझायौ । इन तो दरस हमारौ पायौ ॥
निरफल गये कहा गुन होई । दै परमोद पठाई दोई ॥

ते समझाई दीक्षा दीनी । माला तिलक छाप रुचि कीनी॥
पीपा कै दरसन भौ भागी । भगति पुरातन हिरदे जागी॥
करि परनाम गई घर बोई । भोतर पैठन देइ न कोई ॥
सासु रिसानी मारन धाई । ऐसो भेख कहा करि आई ॥
पुरुष न कोई वा घर माही । गए गैतरैं आए नाही ॥
इन अपनै मन कियौ विचारू।कंत न बकसै करै परिहारू ॥
निकसी नारि न लाई बारा । पायौ साथ भलौ बनिजारा॥
पाछै भगति मिलै सुखदाई । बहुरि न घर की बात चलाई ॥
इतनी गोष्टी करि उठि आए। मास दिवस पीपा बिरमाए॥
बाढी प्रीति भयौ सुख भारी । कारं टका दिए सौ च्यारी॥
कोस पांच पीपा पहुंचाए । दिन तोसरे देश मैं आए ॥
बांमन एक नदी मैं रोवै । महा दुखी दमहूं दिसि जोवै ॥
मारग चलै न बूझै कोई । स्वामी जाय खितायौ सोई ॥
कहुरे कौन पोर है तोही । देखे दया भई है मोही ॥
बांमन कहै लूटि मोइ लीनौ । बहुत अकाज बराबर कीनौ ॥
मांग्यौ दरब दियौ सब कोऊ । उबर्यौ नही आपनौ ढाऊ॥
बेटी एक विप्र कूं ब्याहूँ । लगन लिखाई सीधो चाहूं ॥
अबहूं कहा करूं घर जाई । मरिहूं मीच बहुत बिस खाई ॥
स्वामी संग लियौ है सोई । दियो समाखु बहुरि सुखदाई॥
आए दौड़ मन्दिर पासा । बांमन सेरी देख तमासा ॥

तूं जनि बोलै हम ही जानै । देवत सीख बुरी जनि मानै ॥
जैसी कहूं सु मानौ आजू । निहचे होय तुम्हारौ काजू ॥
समाचार सब सियहि सुनाए। जबतैं गये बहुरि फिरि आए॥
बांमन केरौ मूंड मुंडायौ । माला दीनी तिलक बनायौ ॥
मंजन करि बसतर पहिराए । सूरजसेन दरस कूं आए ॥
पीपा कहै मोहि मिलि पाछे । इनके चरन परसिकै आछे ॥
जैसे रामानन्द गुसांई । तैसे जांनि परसिये पाई ॥
भाग हमारे दरसन दीनौ । घरही बैठे कारज कीनौ ॥
तब सूरज मन उपज्यौ भाऊ । माथै धरै विप्रके पाऊ ॥
दिवस पांच राख्यौ विरमाई । भगति करौ पीपै फुरमाई ॥
तब सब हो मिलि पूजा कीनी । जाकूं जैसी आग्या दीनी ॥
सूरजसेन दरब लै आयौ । सरधा करि बांमन हि चढायौ॥
पीपा पहुंचावन गो दूरी । बांमन की मनसा भइ पूरी ॥
तैंही करम सु तजियो आजू। निरभै भयौ सरयौ सब काजू॥
बांमन गो स्वामी फिर आयौ । परपंच भेद न काहू पायौ॥
ढचर करै सब कै मन मान्यौ । साध असाधन काहू जान्यौ॥

[दोहा]

दाता सब सोरह बिसे, उपगारी है बीस ।
दास अनंत कही सही, रचि राख्यौ जगदीस ॥

❋ चौपाई ❋

पीपौ मनमहि करै बिचारू। अजहूं न हम छांड्यौ संसारू॥
जो लग है सबही सूं पीती। तौ लग नहीं भगति की रीती॥
चलि सीता जइए परदेसू। दिना चार परिहरिए देसू॥
कैसौ मन धौं रहै हमारौ। कै दूखै कै होइ सुखारौ॥
आदर अन आदर समझीजै। निरदावे की भिख्या लीजै॥
बहुत बरस टोडै घर कीनौ। खरचत खात मनहि सुखदीनौ॥
अब जिन सीता सोवै आजू। कीजै बेगि आपनौ काजू॥
घर बन सदा बराबर कहिए। तौ इक बार बनहि में रहिए॥
माया की परतीति न कीजै। जदपि हरी कै संग रहीजै॥
जब तें गागरोनि तजि आए। सह्यौं न कष्ट महा सुख पाए॥
सीता बोलै तुम ही जानौं। अजहूं भरम कहा जिय आनौं॥
करता करैं तुम्हारी भाई। चलौ चहूधां जित मन जाई॥
मोहि कहा बूझत हौ सांई। सबद नहीं मेट्यौ अब तांई॥
हूं तो चरन कमल की चेरी। सदा समीप रहै गति मेरी॥
निकसे कछू न लागी बेरा। उत्तर कियौ महोछव केरा॥
काहू जानैं काहू नाहीं। सगरी सौंज रही घर माहीं॥
दिवस तीसरे छांड्यौ देसू। रीछ पर-भुंइ कियौ प्रवेसू॥
एक नगर देवालय आए। लोक महाजन बैठे पाए॥

तहां दोउ कीरतन कीनौ । मोही सभा चित्त हरि लीनौ ॥
करी बड़ाई राख्यौ मांनू । बांमन कै घरि लियो मिलानू॥
काहु सूं नांही पहचानी । हरि कै हेतु बढी है कानी ॥
पूजा बहुत चढी तिहि गाऊं । बांमन विनवै हूं जौं पाऊं ॥
बहुत बरस तै भूखौ मरऊं । भिक्षा माँगे भोजन करऊं ॥
सो सब दरब दियो है ताही।बहुत हूतो बांमन कै चाही ॥
अचरज भयौ नगर मैं भारी।पीपा बहुरि चले कर झारी ॥
संसौ कछू नहीं मन मेरै । रहूं भरोसै हरि जी तेरैं ॥
खेलत रमत गए तिहि ठाऊं । बन खंड मांझ बसत हौ गाऊं॥
सारे लोग निठुरता मांही । आधौ बसतो आधौ नांही ॥
राज रिसानो भागे वोही । ऊजर खैरै जाइ न कोही ॥
सो पीपा को दियौ बताई । नर नारी मसकरी चलाई ॥
अपनैं पास न बैठन दैही । दया बिहूना अपजस लैही ॥
तब सीता स्वामी सू भाखै । तालक नाहीं करता राखै ॥
जेठ मास भर दुपहर घामू । सूनैं घर पायो विश्रामू ॥
नीरी नदी नीर भरि आन्यो । ता पीछे हरि कीर्तन ठान्यो॥
सौ मुरती सन्यासी आए । लोगन स्वामी पास पठाए ॥
जहां राम जन हैं तहँ जाहू । कैं आपनी गांठ कौ खाहू ॥
परदेसी का जानै मरमू । बासी जानि करावै धरमू ॥
पीपा तिन कौ आदर कीनो । न्यारे मंदिर बैठन दीनौ ॥

सीता सूं मंदिर झरवायौ । चूलै चौका जल भर वायौ ॥
पात मंगाये पातर कीनी । तब हरि बहुत रसोई दीनी ॥
प्रेग्यौ एक हुतौ हत्यारौ । उन ही लोकन कौ भै डारयौ ॥
सुनी कीरतन आयौ सोई । बन मैं रहै न देखै कोई ॥
पीपा के पग लाग्यो धाई । हूं हत्यारौ मारी गाई ॥
मूंड मुंडायौ गंगा जाई । सीधौ करयौ न जीमैं कोई ॥
मांगै दंड कहाते देऊं । अब हू मरम तुम्हारौ लेऊं ॥
मया करौ तो दीजौ पातो । मैं परहरी आपनी जाती ॥
तुम सूं बोलि सकै नहिं कोई । पहले मरन हमारौ होई ॥
तब स्वामी सब सौंज मंगाई । वाकै मन की संक भंजाई ॥
चावर चून दार घृत खांडा । बहुत भरे गोरस के भांडा ॥
करी रसोइ लागो भोगू । निरभै व्है जीमै सब लोगू ॥
हरखि हरखि जीमैं संन्यासी : कुडुंब समेत नगर के वासी ॥
अनहि बुलाए बैठे आनी । देखि रीति सब के मन मानी ॥
पाई पांति भयौ सुख भारी । ऐसो पीपा पर उपकारी ॥
अपनो कारज करै न काऊ । परमारथ पर सांचौ भाऊ ॥
ऐसैं फिरत गई मैं मेरी । सूरजसैन लगी औसेरी ॥
चहूं देस दोरे अखवारा । आपन आतुर लग्यौ पुकारा ॥
अमो कोस पर पीपा जाई । आने मंदिर होय बधाई ॥
पूजा भगति बड़ाई कीनी । आधी संपति घर ते दीनी ॥

अब जनि स्वामी छांडै मोही। मनसा वाचा सेऊं तोही॥
पीपा के मन भयौ अनंदू। ऐसौं ख्याल करै गोविंदू॥

[दोहा]

गुरु निरमोही चाहिए, सिस्य न छांडै प्रीत।
स्वारथ छांडै हरि मिले, सुनौ भगति की रीति॥

❋ चौपाई ❀

टोडै बसत महा सुख देखै। सुमरन भजन करत संतोखै॥
अब की बेर कसोटी आई। पीपा की परतीति न जाई॥
मन मथ समयौ देखि न बाऊ? मिहरी मुनुस हि बाढ्यौ ताऊ॥
पर्यौ दुकाल देस महि भारी। बालक छांडि चली महतारी॥
बापहि पूत रु पूतहि बापू। सब ही के मन भयौ संतापू॥
सूरजसेन कियौ मन मैलौ। विसर्यौ भाव भगति कौ गैलौ।
नाज निगानौ मिलै न काटै। साहूकार पत्याहिन आटै॥
चोरे छोर दिए मुकराई। जाकौ मन सोई लजाई॥
पूजौ नही घास अरु दानौ। घर मैं दुर दुर नाज बिकानौ॥
जाकै दरब सु राजा मांगै। खेरे परिहरि परजा भागै॥
प न चले बटपरा लूटै। कूटै परहि राति घर फूटै॥
मै बेचै अरु बेटी बेटा। तऊ न भरै नाज सूँ पेटा॥

नर न मानै सगे सगाई । प्यारे प्रीतम करै ठगाई ॥
चढि चढि मारे गांव नरेसा । ऐसौ दुंद भयौ सब देसा ॥
पौरि कपाट देहि करि गाढे । बाहिर बहुत भिखारी ठाढे ॥
अभ्यागति कौं लखै न कोई । परदा दै दै करहि रसोई ।
जागि दान अरु व्याह बिसारे । दिन दिन मरे कठोरत हारे ॥
कोई काहू ना पतिआई । मानुस मानुस भूँजै खाई ॥
तब सीता बोलै सत पूरी । हमते करता नाहीं दूरी ॥
महा प्रलय मैं राखै सोई । जनको पीर न व्यापै कोई ॥
ऐसी कसनी कौन डराई । जाकै राजा राम सहाई ॥
मेरी मति जिन जानौ काची । स्वामी बात कहत हूं साची ॥
पीपौ कहै भरौसौं मोही । कबहूं डिगत न देखूं तोही ॥
सदा करैं भगतन की भाई । तन मन धन दै प्रीति बढाई ॥
अब का करे दुकाल हमारौ । सदा समीप राम रखवारौ ॥
इहि परकार करैं मन पूरौ । जैसे रन मैं पैठै सूरौ ॥
दूनी भगति करत है दोऊ । द्वारैं भूखौ परै न कोऊ ॥
पायौ कहूं दरब कौ भांडा । धरती मांझ पुरातन गाडा ॥
सो सब खरच्यौ संक न मानी। परमारथ की पूजा ठानी ॥
साधू पूजै पाप न कोई । जोर करै ताही को होई ॥
धूति मूसि गरकटई करिए । नारि पराए गहने धरिए ॥
जिहि तिहि भांति भगत जौ सेवै । मानै नही दूसरे देवै ॥

ताको फल वैकुंठ बसेरौ । बहुरिन करै जगत मैं फेरौ ॥
सबहि ग्रंथ मैं देखै नीकै । तौ परतीत भई है जीकै ॥
और धर्म तै मिटै न सोगू । समुझै नही आंधरो लोगू ॥
ऐसी हरी भगत की पूजा । नाही और आसरौ दूजा ॥
भगति करत जौ व्यापै दुख । तौं मानिए सवायौ सूखू ॥
बहुरि देस मै भयौ सुकालू । जहां तहां मिटिगो दहचालू ॥
पहुकर चले दूगि के जाती । बहुत निखरचे मिले संगाती ॥
ते टोडै महि निकसे आई । पीपै अपनी पीर सुनाई ॥
स्वामी खरच हमारे नांही । देहु कछू तो तीरथ जांही ॥
तुमही हो सबही के दाता । और न कोई बूझै बाता ॥
तब स्वामी बनिया कै जाई । दीनौ दरब चले सुख पाई ॥
और सबहि कूं करी रसोई । जाती भूखो रह्यौ न कोई ॥
बनिया कागद लिखि दिखरायौ।पीपा दैन कहे सुख पायौ॥
दिन दस बीते मांगन लागौ । समुझै नहीं अचेत अभागौ॥
पीपा कहैं कबहि तैं दीनौ । को है साखी कब मैं लीनौ॥
बनिया कागद काढि दिखायौ।कोरौ कागद नीसरि आयौ॥
नीची नारि किए घर जाई । कहि न सकै मन मैं पछिताई ॥
कहा करूं परमेसुर एहू । काहू लै काहू कूं देहू ॥
मैं राखी पीपा की कानी । ताते भई दरब की हानी ॥
अब कबहूं परतीति न कीजै।जब लगि इहि तन जगमें जीजै॥

[दोहा]

जब जब दास दुखी भए, सुखी करै भगवंत ।
सो साहिब क्यूं छांडिए, सुनरे दास अनंत ॥

❋ चौपाई ❋

एक दिना सीधो घर नाहीं । पीपा चले चौहटे माहीं ॥
सब कूं भगति करायौ चाहै । मूरख जानै हम कू बाहै ॥
तेलनि एक रूप अधिकारी । तापर स्वामी दीठि पसारो ॥
ऐसे तन जौ सुमिरैं रामू । तौ विधनां सारै सब कामू ॥
कंतहि मरै सती जब होई । राम राम सुमिरै सब कोई ॥
यह जिय जानो राम कहायौ । तेलनि क्रोध कियौ दुखपायौ ॥
हम सूं कहा मसकरी करहू । कुबचन बोलो तुम ही मरहू ॥
पीपा कै मन उपज्यौ रोसू । भली कहत क्यूं लावै दोसू ॥
सुनसहि मरै कहैगी तबही । आवन जरन चलैगी जबही ॥
इतनी कहि स्वामी घर जाई । तेलनि कै मन संक उपाई ॥
चित आकरष्यौ वाकै पतिकौ । उधरयौ द्वार उरधकी गति कौ ॥
मरतक भयौ न लागी बारा । तब ही तेलनि राम संभारा ॥
सब कुटंब रोवै नर नारी । भैया बहन पिता महतारी ॥
सिमिटे लोग मरी तिन काढ्यौ । सुनिसु निसोगसबहिकै बाढ्यौ ॥

तेलनि सती होंन सँग लागी । सब सुख बदलै, देखी आगी॥
बहुत भांति बाजने बजाए । मरघट पहुंचे स्वामी आए ॥
सती पुकारै रामैं रामू । नैक न जीभ करै बिसरामू ॥
हसि हसि पीपा बूझै बाता।अब क्यूं राम कहति हौं ! माता!॥
तबतैं जिय तन सुमरयौ काऊ । मरती बेर भयौ है भाऊ॥
तेलनि के मन उपज्यौ दापू । कंत मुयौ तैं दियो सरापू ॥
अज हूं कहा करत हौ भाई । मेरी मीच छिनक मैं आई ॥
पीपौ कहै भगति जौ करहू । मरौ जिवाऊं बहुरिन मरहू ॥
इतनी सुनि तेलनि सुख पायौ।बाहु बोलदै मरौ जिवायौ ॥
घर लै आये दीक्षा लीनी । भगत बुलाय वधाई कीनी ॥
ऐसै पीप बहुतक तारै । ते निरभै जमराज न मारै ॥
हरिजन बैरी तहू सु नीकौ । कबहू भंग न जाकै जीकौ ॥
साकत प्रीतम नांही कामा । जब तब बिरच करै संग्रामा ॥
साधु सँगति सबही मिलि थापी।जातैं मुक्ति होत है पापी ॥
साधू चंदन तरु अनुमाना । सब कूं करै जु आप समाना ॥
तातैं साधु-संगति कीजै । और झूठ काहू न पतीजै ॥
इतनी कथा मरै की भाखी । तेलनि सती होत त राखी ॥
ता पीछे आए दल पंचा । जहां महोच्छव सीधो संचा॥
एकहि वेर पंच दल दीनै । पांच गांव ते पीपै लीनैं ॥
एकहि दिना जाय जो नाही । तो सगरे दुखै मन माही ॥

चल्यौ महोछब पीपौ जबही। आए भगत पाहुना तबही ॥
तिन गहि राख्यौ दैइ न जाना॥जब लाग्यो मन में पछिताना॥
तहां तहां परमेसुर जाई। पीपै को सो भेख धराई ॥
उपजी प्रीति महोछब करिया॥तीन महोछब पीपा मरिया॥
बडे महोछब आई वोही। ध्योसै सिख कीनी ही दोही ॥
गैटलाव पर दीक्षा दीनी। सब ठिकु मिलयो स्वामी चीनी॥
तीरथ करत न बाच्यौ कोई। प्रेम सहित गुन गावहि दोई ॥
माला तिलकभद्र सिर सोहै। देखि रूप सब कौ मन मोहै ॥
परम चतुर सत संगति कीनी।पढ़ी गुनी सब की मत लीनी॥
मिली महोंच्छब गुरु कूं आई। नैन सिराने तपति बुझाई ॥
तिनही देखत पीपा मरियौ।सब काहू मिलि क्रिया करियौ॥
मन बिलखानी रोवै दोई। थोरी मिलन महा दुख होई ॥
देखै नही दिना दस बीसा।कहा विजोग भयौ जगदीसा॥
पीपा हमरे प्रगटे आई। गुरु की जाति न करी अघाई ॥
बहुरि विचारैं टोडै आवै। चलो सिया कौ दरसन पावै ॥
छाड्यौ दूरि पाछलौ गांऊं। पीपा मरयौ दूसरे ठांऊं ॥
तीजै गांव पहूंची जबही। देखी चिता तीसरी तबही ॥
निहचै मरयौ कह्यौ सब काऊ। भयो अचंभो सगरौ गाऊ ॥
बहुरि चली टोडै महँ आई। स्वामी भेटे आंखि सिराई ॥
सगरी कथा कही समझाई। सिया सहित पीपैं कूं भाई ॥

सूरजसेन मिलन कूं आए। ता पीछे चूहरे बुलाए॥
देखौ नारि तुम्हारी आई। घरलैजाउ न हौंहि पराई॥
तब वै डरपे संग न लीनी। कित हू जाहु विदा हम दीनी॥
इन को मन परमेसुर लागो। हमते ताही दिन ते भागो॥
अब हम दावौ करहि न काऊ। चले चूहरे उपज्यौ भाऊ॥
ऐसै पतित सदा गति पावै। जे जे सरन राम की आवै॥
राही रुकमनि तिन कौ नाऊं।भगति हेत हू प्रगट जनाऊं॥
गुरु कूं मिली महा सुख पायौ।सोच बिसरिगो प्रेम लगायौ॥
जिन कूं ठाहर कितहूं नाही। ते केसौ की सरन समाही॥

[दोहा]

पीपा के गुन कथन कूं, कौन कवीसर होय।
परचे बरनत थकि रहे पार न पावै कोय॥

✻ चौपाई ✻

एक दिना कीरतन होई। देवालय देखै सब कोई॥
पीपा हाथ हाथ सूं घसियौ। देखत चरित सभा सब हसियौ॥
तब सूरज बूझै कर जोरे। स्वामी संसौ उपज्यौ मोरे॥
कर सूं कर मीड्यो कहि काजा।सोतुम कहौ करौ जिन लाजा॥
पीपा बोलै सुनि सति भाऊ। चंदोवा में बरत बुझाऊं॥

पुरी द्वारिका औसर होइ । लिए चिराक जना द्वै कोई ॥
एक चिराग चंदावै लागी । हाथ एक जू प्रगटी आगी ॥
मै कर मींडि बुझायौ सोई । जौन पत्यावहि पठवौ कोई ॥
ऐसी बात न काहू मानी । पीपै कही झूठ करि जानी ॥
तीन सैकरा तीनहु बीसा । इतनी दूरि कहां ते दीसा ॥
ऐसो झूठ न बोलै साधा । जाते बहुत लगै अपराधा ॥
सूरज सेन पठाए दूता । पुरी द्वारका जाय पहूँता ॥
देखि थेगरी बूझ्यौ पंडा । चंदोवा काहेते खंडा ॥
बांमन बोलै सुनि रे जाती । भयौ कीरतन सगरी राती ॥
भीर भई नाऊ लरखरिया । ता दिन यह चराक सूं बरिया॥
पीपै करसूं मीड बुझायौ । बड़ो भगत टोडै ते आयौ ॥
इतनी सुनत भयौ सुख दूनौ । नर आंधरौ जु भगति विहूनौ॥
बहुरि दूत टोडै चलि आए । समाचार सूरजै सुनाए ॥
सूरज के मन उपज्यौ भाऊ । सिर बंदै पोपा कै पाऊ ॥
इतने परचे परगट गाए । जब ते कृष्ण द्वारिका आए ॥
और गुपत हूं जानूं नाही । ओछी बुधि क्यूं भगत पत्याही
तऊ तौ कहूं जितिक मति मेरी।अवगति गतिको जानै तेरी॥
पुरब भयौ रैदास कबीरा । सब काहू कूं दीनी धीरा ॥
दक्खिन भगति नांमदे राखी।जाकी दिनदिन लीजै साखी॥
पच्छिम पीपा परगट कीनी । भगति बताइ सबन कूं दीनी॥

उत्तर धना जाट अधिकारी। पायौ परचौ भगति पसारी ॥
लघु बीठल भयौ अंतर वेदा। सब सूं कह्यौ भगति को भेदा॥
बांधूगढ भयौ सैना नाऊ। सो भगतन कूं भयौ सहाऊ ॥
राय सैन मैं अंगद भयऊ। हीरा जगन्नाथ कूं दयऊ ॥
भो चीतौर भुवन चौहाना। ताकी भगति चढी परवाना ॥
माधोदास भयौ जगनाथी। तिहि परमेसुर कीनौ साथी ॥
तिलोकचंद अरु मीरां बाई। तिन की हरि सूं बहुत सगाई॥
राँका बाँका हुते अजाची। कीनी भगति जगउत मैं साची॥
और सोरह चत्रभुज की नारी।काटत कंठ न भिदी कटारी॥
ए परचे के भगत बखानू। परगट गुपत और का जानू ॥
कलि पैसार भए जन एते। और न जानूं दूं हैं केते ॥
पीपौ पारब्रह्म को अंसू। है वैष्णव सुख को सरबंसू ॥
जाको जस गाये निसतरिए।हरखिहरखि कीरत बिसतरिये॥
ना काहू सूं करी उपाधी। ऐसी भगति लोक मैं साधी ॥
सब जीवन की कीनी सेवा। घट घट पूज्यो आतम देवा ॥
वैरी मित्र आपही कीजै। झूठौ दोख और को दीजै ॥
जो जाको जानत है जैसो। ताकौ सोय उपतिष्ठै तैसो ॥
ज्यूं दरपन मैं मुख दरसावै। रूप कुरूपैं फेरि बनावै ॥
तातैं सब घट कहिए रामू। तब ही जीव लहै विश्रामू ॥
छाडैं लोक बेद परवारू। राम नाम ते उतरैं पारू ॥

बेद पुराण समृति सब सोधी। दास अनंत कथा परबोधी ॥
जब लग मन मैं दुविधा होई। तब लगि ब्रह्म न चीनै कोई ॥
निरबैरी नाहो अभिमानू। तासू कहिए ब्रह्मग्यानू ॥
देस दिसावर उपजी भगती। जो साधे सा पावै मुगती ॥
च्यारि संप्रदा भीतरी आवै। सो भगती हरि कै मन भावै ॥
सदा कुलीन कहावै सोइ। मुगति नही तौ अगति न होई ॥
हरि राखैं बानै की लाजा। ताकौ कहा करै जमराजा ॥
रामानंद कौ अनंतानंदू। सदा प्रगट ज्युं पूरण चन्दू ॥
ताकौ कृष्ण दास अधिकारी। सब कोइ जानै दूधाधारी ॥
ताकौ अगर आगरै प्रेमू। लेनिबहयौ सुमिरन कौ नेमू ॥
अगर की सीख विनोदी पाई। ताकौ दास अनंत हि आई ॥
ता प्रसाद परची यह भाखी। सुनौ संत जन साची साखी।
यह परचई सुनै जो कोई। सहजै सब सुख पावै सोई ॥
वक्ता श्रोता पावै मोखू। नासै काम हेत कौ दोखू ॥
इतनी कथा कही पीपा की। जानी बुद्धि सपत दीपा की ॥
तीरथ कोटि करै असनानू। जहां तहां विधि सूं दे दानू ॥
जोग जाग जप तप ध्रम जेते। हरि की कथा हि न पूजै तेते ॥
सुर नर मुनि ब्रह्मा दिक गावहि। पार ब्रह्म कौ अंत न पावहि ॥

[दोहा]

दास अनंत कहा कथै, सारद लिखतन और ।
सेस नाग गावै सदा, नूतन गुन उठि भोर ॥

–:(इति श्रीपीपाजी की परिचई संपूर्ण):–

— समाप्त —

श्री स्वामीजी केसंदास सिख भगवानदास, लिखतं सर्व संतों का खाना जाद गुलाम । बाचै बिचारे जिसै रांम रांम । यह पुस्तक महाराज श्री पनारामजी निरंजणी ठिकाना सिवाणची दरवाजा जोधपुर में है तिणा माहि सूं उतारी सम्वत १९९० जेठ सुद पंचमी वार मंगलवार द॥ साध द्वारिकादास कबीर पंथी गांव बीरड़ावास परगना जोधपुर मारवाड़ वालेकी कापी लेकर पीपावत गिरिधारी जी ने उतराई ।